महिला संबंधी प्रथाओं का क्रमिक विकास
मुग़ल काल से समकालीन भारत तक : एक ऐतिहासिक अध्ययन

पीएच० डी० हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध का प्रारूप

शोध प्रस्तावना
स्नातकोतर इतिहास विभाग
सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोधनिर्देशक :-

डा0 उमेश कुमार
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोतर इतिहास विभाग
विनोद विहारी महतो कोयलांचल
विश्व विद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

शोधार्थी :-

सुधा मिश्रा
स्नातकोतर इतिहास विभाग
विनोद विहारी महतो कोयलांचल
विश्व विद्यालय, धनबाद

महिला संबंधी प्रथाओं का क्रमिक विकास मुग़ल काल से समकालीन भारत तक : एक ऐतिहासिक अध्ययन

भूमिका (Introduction)

मुग़लकाल से पूर्व स्त्रियों की दशा काफी अच्छी थी पुरुषों के सामान ही महिलाओं को भी सब अधिकार मिले हुए थे| इतिहास के प्रारंभिक रूप के अध्ययन से यह पता चलता है कि शुरू से ही नारी परिवार का केंद्र बिंदु रही है (सरकार,1999,111) |[1] समाज में महिलाओं का वर्चस्व था महिलाएं समाज के लिए एक आदर्श थी (प्रसाद, 1931, 166) |[2] मानव जीवन के विकास में नारी की अहम भूमिका थी माता को परिवार में प्रथम स्थान प्राप्त था परिवार में महिलाओं का काफी सम्मान था उन्हें कई प्रकार की शक्तियां प्राप्त थी (दासगुप्ता, 1953, 49–50) |[3] धार्मिक कार्यों में उनकी उपस्थिति मान्य थी सभी प्रकार के पूजापाठ, धर्म–कर्म के कार्यो में स्त्री का होना अनिवार्य माना जाता था (गौड़,1995,165) |[4] लेकिन यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही मुगल काल में उनके अधिकारों पर पाबंदी लग गई महिलाएं अब एक सीमा रेखा के अन्दर तक ही सीमित रह गई उन्हें हर चीज के लिए पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता था (वेंडर,1925, 63) |[5] अचानक से सामाजिक रूप रेखा में हुए बदलाव के कारण कालांतर में धीरे–धीरे समाज मातृसत्तात्मक से पितृसत्तात्मक हो गया और नारी समाज के हाशिए पर चली गई (अग्रवाल,1988, 35) |[6]

मुगलों के आते ही भारत में बहुत सी महिलाओं से संबंधित प्रथाएं अस्तित्व में आई, जिसने महिलाओं के जीवन को बहुत हद तक प्रभावित किया | मुग़ल काल वह काल था जिसमें नारी की दशा सबसे ज्यादा दयनीय थी (मिश्रा, 1967,12) |[7] जितनी भी कुप्रथाएँ उत्पन्न हुई मुगल काल की ही उपज थी, जो धीरे–धीरे समकालीन भारत में दूर होती जा रही हैं (चोपड़ा, 1963, 254) |[8] मुगलों के आगमन से उत्पन्न अनेकों प्रचलित सामाजिक प्रथाओं के कारण स्त्रियों की स्थिति काफी जटिल हो गई (कस्तावर, 2006, 200) |[9] मुगलों के आगमन से नारी की दशा पहले की तुलना में दिन–प्रतिदिन बिगड़ती चली गई लड़की के जन्म को एक अभिशाप के रूप में देखा

जाने लगा, कन्या के जन्म पर परिवार में दुख के बादल छा जाते थे (सिराज, 1963, 643) |[10] इस युग के आते ही स्त्रियों के दिव्य गुण धीरे-धीरे उनके अवगुण बनने लगे (अलतेकर, 1962,179) |[11] जो स्त्रियां वैदिक युग में धर्म और समाज का प्राण थी, मुगल काल में उनकी स्थिति पूर्णतया बदल चुकी थी, (कौशिक, 2004, 64) |[12]

भारत के लोग महिलाओं के साथ अतीत में घटित घटनाओं, प्रथाओं और उनके उन्मूलन हेतु किए गए कार्यों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करना चाहते हैं | आज भी कई कस्बों, गांवो, राज्यों एवं जिलों में प्राचीन रूढ़िवादी विचारधाराएं पोषित होती आ रही है | इस शोध में हम उन सभी कुरीतियों का अध्ययन वर्तमान के संदर्भ में भी प्रस्तुत करेंगे, ताकि जो महिलाएं आज भी उन प्रथाओं के चपेट में है उनपर सरकार का ध्यान जाए और उनके उन्मूलन हेतु सरकार इस शोध के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र में नारी के साथ हो रहे अन्याय का निदान करने के उपाय कर सके |

शोध समस्या (Statement of the problem)

- महिलाओं से संबंधित प्रथाओं की शुरुआत कब से हुई, इन प्रथाओं ने नारी के अस्तित्व को किस तरह झकझोर कर रख दिया, कैसे बदलाव महिलाओं के जीवन में आए, समय के साथ-साथ उनकी दशा और दिशा में क्या परिवर्तन हुए |
- मुगलों के वर्चस्व का नारी के सामाजिक उत्थान पर क्या प्रभाव पड़ा, मुगलों के आगमन ने कैसे नई-नई प्रथाओं को जन्म दिया और जो प्रथाएं मंद गति से बढ़ रही थी उसमें अचानक बढ़ोतरी होने लगी, कैसे महिलाओं का शोषण बढ़ने लगा और इनकी स्थिति जटिल होती गई |
- आधुनिक भारत के आते ही महिला संबंधी प्रथाओं में किस प्रकार के बदलाव देखे गए, इन परिवर्तनों पर महिलाओं की क्या प्रतिक्रिया रही, किस प्रकार उनका जटिल जीवन सरलता की ओर अग्रसर होने लगा |
- सुधारकों द्वारा किए गए सुधारों के फलस्वरूप महिलाओं के दशा और दिशा में क्या उत्थान देखने को मिला, क्या इन सुधारों के पश्चात उनके जीवन में जागरूकता आई, किस प्रकार महिलाएं अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु आगे आई, अपने अस्तित्व के जंग में उनकी क्या भूमिका रही |

- मुगल कालीन भारत में जितनी भी प्रथाएं अस्तित्व में आई उन प्रथाओं के निवारण हेतु जो–जो सुधार, वैधानिक उपाय किए गए वह समकालीन भारत में कहां तक सफल हुए, इन सुधारों के फलस्वरुप समकालीन भारतीय स्त्रियों के दशा में कौन से बदलाव देखने को मिले |
- नारी की मौजूदा दशा में परिवर्तन हेतु समाज सुधारकों ने किस प्रकार प्रयास किए इन के प्रयासों के फलस्वरूप सरकारी हस्तक्षेप एवं नए नियमो के कारण स्त्रियों की मौजूदा हालात में क्या बदलाव देखे गए, इन सुधारों के कारण समाज में नारी की हालातों में किस प्रकार का उत्थान हुआ |
- महिलाओं से संबंधित कुप्रथा पर प्रतिबंध के पश्चात, समकालीन भारत में नारी किस प्रकार प्रगति की ओर अग्रसर हुई, उनका जीवन–स्तर किस प्रकार का रहा |

स्टेट ऑफ़ द आर्ट (State of the Art)

विभिन्न इतिहासकारो, विचारको एवं लेखको ने अपने–अपने विचार मुग़लकालीन नारी की दशा पर प्रस्तुत किये है-

(इब्नबतूता 1997, 25) ने अपनी पुस्तक में सती प्रथा एवं प्रचलित प्रथाओं के बारे में लिखा है कि उत्तर भारत में पर्दा प्रथा थी तथा यह एक प्रकार का विशेषाधिकार था |[13]

(फिरोज शाह 1975, 293) ने अपनी आत्मकथा फतुहाते फिरोजशाही में लिखा है मुस्लिम नगरों में इस्लामी नियमों के विरुद्ध परंपरा चल पड़ी है, पवित्र अवसरों पर स्त्रियां पालकी, घोड़े–गाड़ियों तथा खच्चरों पर सवार होकर बड़े–बड़े दल बनाकर पैदल ही दरगाह पर जाती हैं | गंदी आदतों वाले असभ्य व्यक्ति इस अवसर की प्रतीक्षा करते हैं, क्योंकि ऐसे में उनको अनुचित तथा अवांछनीय व्यवहार करने के लिए अवसर प्राप्त होता है | मेरी आज्ञा है कि अब कोई भी स्त्री दरगाह पर नहीं जाएगी, अन्यथा वह दंड की भागी होगी |[14]

(कॉन्टी 1857, 85) ने अपनी पुस्तक इंडिया इन द फिफ्टीन्थ सेंचुरी में लिखा है, जो स्त्री सतीप्रथा को मानने से इंकार करती थी उसके पति की सारी जायदाद उसके बच्चों को ना मिलकर दुसरे सगे संबंधियों को मिल जाती थी, कुछ अन्य कारण

भी बतलाए हैं विधवा अपने संबंधियों द्वारा सती होने पर बाध्य की जाती थी | समाज में अपने और अपने परिवार के प्रतिष्ठा हेतू विधवा को सती होना पड़ता था | कई बार इच्छा के विरुद्ध उन्हें अग्नि में फेंक दिया जाता था |[15]

(श्रीवास्तव, 1975, 44) ने अपनी पुस्तक मध्यकालीन भारतीय संस्कृति में कहा है भारत के उन प्रदेशों में विशेषकर दक्षिण प्रदेशों में जहां मुसलमानी प्रभाव नाम-मात्र का था कोई पर्दा नहीं था |[16]

(गुलबदन बेगम, 1680, 251) ने अपनी पुस्तक हुमायूंनामा में लिखा है बहु विवाह के कारण हरम की स्थिति काफी संघर्ष पूर्ण एवं जटिल हो गयी थी | [17]

(मजुमदार, 1951, 394) मध्यकालीन भारत का इतिहास में उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है कि स्त्रियों से प्रथाओं के नाम पर उनकी सारी स्वतंत्रताए उनसे छीन ली गई थी |[18]

(कस्तवार, 2006, 64) उन्होंने अपने पुस्तक मध्यकालीन भारत में लिखा है एक स्त्री अपने शादी के समय ही सभी प्रकार के धार्मिक क्रियाओ को कर सकती थी अन्यथा उन्हें सभी धर्म कर्म के कार्यो से दूर ही रखा जाता था |[19]

मुग़लकालीन नारियो की दशा और अन्याय पूर्ण प्रथाएं आधुनिक भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में अंकित है, जिस पर कतिपय इतिहासकारों ने अनेक शोध कार्य किया है | लेकिन सभी में अलग-अलग किसी एक ही काल में नारियो के दशा में आये बदलाव को उजागर किया गया है | इसलिए मेरे प्रस्तावित शोध में किसी एक काल विशेष पर कार्य न कर, मुगलकालीन भारत में नारी की दशा एवं प्रथाओं के क्रमिक विकास का अध्ययन मुगल काल से समकालीन भारत में हुए परिवर्तनों एवं सुधारों के आधार पर किया जाएगा |

समस्या की जाँच (Problem to be investigated)

- इस शोध में मुगल काल से समकालीन भारत में समाज में प्रचलित महिला सम्बन्धी प्रथाओं का अध्ययन उनके क्रमिक विकास के फलस्वरूप हुए परिवर्तन एवं सुधारों को एक नए दृष्टिकोण से परखना और विश्लेषण करना है | इस अवधी में नारी की दशा कैसी थी, उसमें क्या परिवर्तन देखने को मिले उसको दर्शाना है | मुग़ल काल में नारी का शोषण किस रूप में होता रहा, उन प्रथाओं में सुधार के फलस्वरुप क्या परिवर्तन सामने आए उसका विश्लेषण करना है |
- मुगल काल में नारी संबंधित प्रथाओं के क्रमिक विकास के ऐतिहासिक अध्ययन में समकालीन भारत तक हुए नए तथ्यों के समावेश की चर्चा करना है |
- मुगलों के भारत में आगमन के पश्चात मुगलकालीन महिलाओं की दशा उनकी जीवनशैली में परिवर्तन के फलस्वरुप उनकी दशा में आई गिरावट का अध्ययन किया जाएगा |
- समाज में प्रचलित प्रथाएं एवं अन्य कुप्रथाओं ने कैसे महिलाओं के जीवन को कठिन बना दिया, इन दूषित कुरीतियों के अंत के फलस्वरूप नारी स्थिति में हुए क्रमिक विकास का ऐतिहासिक अध्ययन किया जाएगा |
- मुगल काल से शुरू हो आधुनिक भारत तक यह कुरीतियां प्रथाएं किस रूप में फलती फूलती और पोषित होती रही, उसके क्रमिक विकास का अध्ययन समकालीन भारत तक किया जाएगा |
- मुगलकालीन प्रचलित प्रथा एवं अन्य सभी प्रथाओं, कुरीतियों व रीति–रिवाजों के नाम पर स्त्रियों का किस–किस रूप में शोषण हुआ, और धीरे–धीरे क्या परिवर्तन देखने को मिले, क्या संशोधन हुआ उन सबका परिणाम प्रभाव आने वाली पीढ़ी और समाज में क्या पड़ा, समकालीन भारत में उसमें किस प्रकार का क्रमिक विकास देखा गया, इन सबका अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा |

उद्देश्य (Objective)

- महिलाओं से संबंधित प्रथाओं के विकास के कारणों की पहचान करना |
- महिलाओं से संबंधित प्रथाओं के कारण मुगलकालीन महिलाओं की स्थिति का आकलन करना |
- आधुनिक काल में समाज में हुए सुधारों का महिलाओं के संदर्भ में विवेचना करना |
- नारी की दशा में परिवर्तन हेतु वैधानिक उपायों एवं संवैधानिक उपबंधो का आकलन करना |
- महिलाओं से संबंधित प्रथाओं के कारण उत्पन्न सामाजिक गतिरोधों की पहचान करना |
- वर्तमान में महिला सशक्तिकरण हेतु सम–सामयिक एवं प्रभावी उपायों की पहचान करना |

शोध प्रश्न (Research Question)

शोध प्रश्न इस प्रकार है–

- महिलाओं से संबंधित प्रथाओं की शुरुआत कब से हुई ?
- मुगलकालीन नारी दशा पर इन प्रथाओं का क्या प्रभाव पड़ा ?
- आधुनिक भारत में महिला संबंधित प्रथाओं को लेकर किस प्रकार की प्रतिक्रिया हुई ?
- समकालीन भारत में इन प्रथाओं के निवारण हेतु किए गए उपायों का कितना प्रभाव पड़ा ?
- इन प्रथाओं में, सुधार के फलस्वरुप महिलाओं मे आई जागरूकता ने उनके उत्थान का मार्ग किस रूप में प्रसस्थ किया ?
- समाज सुधारकों, सरकार एवं कानून निर्माण की क्या भूमिका थी ?
- वर्तमान में नारी की दशा में सुधार हेतु क्या कदम उठाए जाने चाहिए ?

शोध प्रविधि और कार्यप्रणाली (Research Design & Methodology)

प्रस्तावित शोध में अपने विषय की प्रासंगिकता के आधार पर विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का चयन किया है |

अध्यायीकरण (Chapterisation)

प्रस्तावित शोध प्रबंध में, शोध को स्पष्ट करने के लिए अग्रलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया है –

पहला अध्याय :- भूमिका (ऐतिहासिक पृष्ठभूमि)

द्वितीय अध्याय :- मुगलकालीन नारी के जीवन पर सामाजिक प्रथाओं का प्रभाव

तृतीय अध्याय :- आधुनिक युग में स्त्रियों के जीवन पर सामाजिक प्रथाओं का प्रभाव

चतुर्थ अध्याय :- महिला संबंधी प्रथाएं एवं समाज सुधारकों की भूमिका

पंचम अध्याय :- महिला सम्बन्धी प्रथाओं पर प्रतिबन्ध एवं भारतीय संविधान के उपबंध

षष्टम अध्याय :- उपसंहार

ग्रन्थ सूचि

उपरोक्त सभी अध्यायों का वर्णन विश्लेषण तथा मूल्यांकन प्रमाणिक तथ्यों तथा आंकड़ों के आधार पर किया जाएगा |

मुगलों के आगमन में बाद नारी के हालातों कि जो भी व्याख्या की गई है, वह सिर्फ मुगलकालीन दूषित प्रथाओं के फलस्वरुप महिलाओं के जीवन में उत्पन्न दयनीय स्थिति को दर्शाने की दृष्टि से की गई है, जो उस कालावधी के सम्यक सत्य को पूरी तरह उजागर नहीं करते हैं | दूसरा इस शोध से संबंधित शोध तथा लेखन कार्य में मुगलकाल और आधुनिक काल को अलग–अलग विषय बनाकर नारी की दशा को स्पष्ट किया गया है, जो महिलाओं के स्थिति में आगे चलकर हुए परिवर्तन और सुधार की स्पष्टता को नहीं दर्शाता है | अतः प्रस्तावित शोध विषय में मुगलकालीन, आधुनिक भारत एवं समकालीन भारत तक महिलाओं से संबंधित सभी प्रथाओं, कुरीतियों एवं उनकी दयनीय स्थिति के क्रमिक विकास के अध्ययन की अपार संभावनाएं मौजूद हैं |

महिलाओं से संबंधित प्रथाओं के अंतर्गत जो भी अध्ययन तथा व्याख्या हुई है वह अधूरी प्रतीत होती है, इस संबंध में देशी और विदेशी दोनों विद्वानों ने व्याख्या करने का प्रयास किया है, फिर भी इनमें गुढ़ और मूलभूत बातों के अध्ययन का अभाव पाया जाता है, उनका अध्ययन पक्षपात पूर्ण तथा एक पक्षीय भी रहा है | मुगलकालीन स्त्रियों के दशा का अध्ययन विस्तारपूर्वक कर इस विषय के संबंध में गहन शोध कर मौजूदा ज्ञान के स्तर पर प्रकाश डाला जाएगा, वर्तमान ज्ञान को बढ़ाने के क्रम में इस विषय पर बहु आयामी ढंग से अध्ययन करने का भी प्रयास सराहनीय रहेगा |

शोध में मुगल काल से समकालीन भारत तक का अध्ययन करेंगे कि जो विभिन्न नियम, कानून और अधिनियम आधुनिक काल में बनाए गए, वे कहां तक प्रभावी रहे | प्रस्तावित शोध प्रबंध का मुख्य स्रोत अभिलेखागार तथा विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध तत्कालीन सामग्रियों होंगी | पुरातात्विक स्रोत में लिखित कई दस्तावेज सहायक सिद्ध होंगे तथा लोककथा, लोकगीत एवं लोकपरंपरा आज भी शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं | मेरे शोध का माध्यम विवेचनात्मक, व्याख्यात्मक, विशलेषणत्मक रहेगा |

<u>डेटा संग्रहण में उपकरणों का प्रयोग एवं विश्लेषण</u>

(Tools to be used in data collection)

डेटा के संग्रहण के लिए निम्नलिखित उपकरण का इस्तेमाल किया जाएगा पुस्तकालय, (मन्नूलाल लाइब्रेरी गया, स्टेट लाइब्रेरी रांची, स्टेट आर्काइव्स ऑफ बंगाल कोलकाता, नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता, खुदा बख्श लाइब्रेरी रांची, फोटोग्राफ्स शोध विषय से संबंधित आर्टिकल, इंटरनेट, कंप्यूटर, कैमरा, फोटो–कॉपी, फोटोग्राफी, नक्शा, गज़ेटीअर्स आदि |

<u>प्रस्तावित शोध का महत्व (Significance of proposed work)</u>

मुगलकालीन महिलाओं से संबंधित दशा, दिशा और प्रथाओं के क्रमिक विकास के अध्ययन के साथ–साथ परिवर्तन और सुधारों का महिलाओं के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्या प्रभाव पड़ा और उनका आगे क्या परिणाम सामने देखने को मिला, उसका प्रभाव कितना व्यापक रहा, और आज के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता किस रूप में रही | संपूर्ण जानकारी के लिए शोध कार्य अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण प्रतीत होता है |

मुगलकालीन नारी के शोषण, अत्याचार और अन्याय को सही रूप में समझने में यह शोध सहायता करेगी | किस प्रकार इतनी निराशा के बावजूद भी महिलाओं की दशा में सुधार होते गए और इतिहास में भी कई बिरंगनाएँ हुई जिन्होंने इन रूढ़ियों को तोड़कर कईयों के लिए प्रेरणा का काम किया, यह शोध महिलाओं की अपमानजनक स्थिति से स्वाभिमान की ओर अग्रसर होने के पद को प्रदर्शित करेगा और महिलाओं और पुरुषों के बीच के अधिकारों को समझने और महिलाओं के शोषण के विरुद्ध हुए यलगार के प्रेरणा को खोजने में मदद करेगा |

मुगलकालीन भारतीय स्त्रियों की दशा का अध्ययन तथा विश्लेषण उनकी प्रत्येक क्षेत्र में स्थिति के आधार पर किया गया है | इस शोध में प्रचलीत प्रथाओं के क्रमिक विकास का ऐतिहासिक अध्ययन किया जाएगा, उनकी भावनात्मक पहलू उनके जीवन पद्धति और समाज में पुरुषों के वर्चस्व को दिखाने की कोशिश की जायेगी, महिलाओं

की सृजनात्मकता आत्मीयता एवं उनकी खुशियां किस प्रकार उनसे छीनती चली गई और किस प्रकार एक गरिमामय जीवन जीने वाली नारी मध्यकाल में अंधकारमय जीवन की ओर धकेल दी गई, किस प्रकार के परिवर्तन उनके जीवन में आए इन सब का अध्ययन किया जाएगा | मुगलों के आगमन के बाद किस प्रकार के बदलाव के कारण नारी मात्र एक भोग की वस्तु बनकर रह गई, इन सब का ऐतिहासिक अध्ययन आवश्यक है |

शोध का योगदान (Contribution to the existing knowledge)

भारत के लोग जब अतीत में नारी इतिहास का अध्ययन करते है तो बहुत ग्लानि महसूस करते हैं, अतः उक्त विषय पर अधिक से अधिक जानकारी हासिल करना चाहते हैं | स्त्रियों की दशा में अचानक हुए परिवर्तन को समझने में रूचि लेते है जैसे नारी की दशा मुगल काल में कैसी थी, क्यों इतना अत्याचार बढ़ा इन सभी जानकारियों से उनके अतीत के ज्ञान में बढ़ोतरी होती है |

जो इतिहास के छात्र है शोध का अध्ययन करने से उनका ज्ञान परिपक्व होता है | अतीत में घटित घटनाओं में सुधार किस प्रकार हुआ, कैसे महिलाओं का उत्थान हुआ, महिलाएं कैसे स्वावलंबी हुई इत्यादि का ज्ञान सहज प्राप्त कर सकते हैं | इस शोध से भारतीय समाज के लोगों के मन मस्तिष्क पर जो नया प्रकाश पड़ेगा उससे नारी की स्थिति में सुधार होगा और शोषण में कमी आएगी क्योकि नारी की दशा में बदलाव की जरूरत आज भी महसूस होती है | अतः प्रस्तुत शोध द्वारा नारी हित के कार्यक्रमों को बनाने और क्षेत्र विशेष में उसे लागू करने में सरकार को सुविधा होगी | यह भारतीय समाज के पुरुष वर्ग के आंखों को खोलने में मदद करेगी | महिलाएं अपने हक अधिकार को समझकर अपने साथ हो रहे अत्याचार, शोषण, अधिकारों के दमन का विरोध कर पाएंगी एवं आने वाली पीढ़ियों को अपने हक़ के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा मिलेगी |

भविष्य कि कार्य योजना (Future Work)

प्रस्तुत शोध में नारी की दशा का ऐतिहासिक अध्ययन मुगल काल से समकालीन भारत तक में, यह दर्शाना है कि मुगल काल में स्त्रियों की दशा काफी जटिल थी उनके सारे अधिकार और स्वतंत्रताए उनसे छीन ली गई थी | इन प्रथाओं के वजह से उनकी स्थिति में काफी बदलाव आया था | आधुनिक भारत के आते-आते उनकी स्थिति में बहुत से परिवर्तन देखे गए किस प्रकार समाज सुधारकों ने इन प्रथाओं का अंत किया गया | इन सबमें महिलाओं के जीवन को उच्च बनाने में समाज सुधारकों की क्या भूमिका रही, आने वाले समय में नारी की स्थिति में किस प्रकार का विकास देखा गया |

सन्दर्भ सूचि (References)

1) सरकार सुमित, "भारत का इतिहास", अटलांटिक पब्लिकेशन एंड दृष्टि, 1999, पृष्ठ संख्या 111
2) प्रसाद वेनी, " हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता, प्रयाग पब्लिकेशन, 1931 पृष्ठ संख्या 166
3) दासगुप्ता शशि भूषण, " इवोल्यूशन ऑफ़ मदर वरशिप इन इंडिया, कोलकत्ता 1953 पृष्ठ संख्या 49-50
4) गौड़ मना, "भारत का इतिहास", संदीप पब्लिकेशन, 1995, पृष्ठ संख्या 165
5) वेंडर सी० वीमेन इन एन्शिएन्ट इंडिया, लन्दन, 1963, पृष्ठ संख्या 63
6) अग्रवाल चंद्रमोहन "भारतीय नारी विविध आयाम" श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, 1988 पृष्ठ संख्या 35
7) मिश्रा रेखा, "वीमेन इन मुग़ल इंडिया", नई दिल्ली, 1967, पृष्ठ संख्या 12
8) चोपड़ा पी० एन०, "सोसाइटी एंड कल्चर डयुरिंग मुग़ल एज", आगरा, 1963, पृष्ठ संख्या 254

9) कस्तवार रेखा, "स्त्री चिंतन की चुनौतियां", राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण, 2006, पृष्ठ संख्या 200
10) सिराज–उस–मिन्हाज, "तबकात–ए–नासीरी", अनु०रैवर्टीभा, भाग1 व 2, नई दिल्ली 1963, पृष्ठ संख्या 643
11) अल्तेकर दि पोजीशन ऑफ़ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, दिल्ली 1962 पृष्ठ संख्या 179
12) कौशिक आशा, "नारी सशक्तिकरण प्रतिशत विमर्श एवं यथार्थ", प्वाइंटर पब्लिकेशन जयपुर 2004, पृष्ठ संख्या 64
13) ईब्नबतुता, "रेहला", नई दिल्ली नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया 1997 पृष्ठ संख्या25, 228
14) फ़िरोज़शाह, "फतुहाते फिरोजशाही", पंचशील प्रकाशन जयपुर, 1975 पृष्ठ संख्या 293
15) निकोलो कॉन्टी, "इंडिया इन द फिफ्तींथ सेंचुरी", संदीप प्रकाशन 1857, पृष्ठ संख्या 85,
16) डॉक्टर श्रीवास्तव के० एल०, "मध्यकालीन भारतीय संस्कृति", रचना पब्लिकेशन 1975, पृष्ठ संख्या 44
17) गुलबदन बेगम, "हुमायुनामा", काशीनगरी प्रचारणी सभा द्वारा प्रकाशित संवत 1680, पृष्ठ संख्या 251,
18) मजुमदार आर०सी०और ए डी पुसल्कर "भारतीय लोगो का इतिहास और संस्कृति वोल्युम वैदिक युग," मुम्बई भारतीय विद्या भवन, 1951, पृष्ठ संख्या 394
19) कस्तवार रेखा, "स्त्री चिंतन की चुनौतियां", राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण, 2006, पृष्ठ संख्या 64

इन सबके अलावा मुग़ल कालीन भारत के फरमान सनद गज़ट्स मैनुअल्स एवं प्रशासकिय प्रलेख भी महत्वपूर्ण हैं |

****